म्हारा हरियाणा, सक्षम हरियाणा

CREATIVE ANDCRITICAL THINKING

REFERENCE & PRACTICE

MATERIAL

Hindi, Class-8

(जहां पहिया है, अकबरी लोटा व सूर के पद पाठाधारित)

TESTING AND ASSESSMENT WING

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TRAINING

GURUGRAM (HARYANA)

प्रतिमान 1 - (जहां पहिया है आधारित)

कभी आपने सोचा है कि आपकी गाड़ी के टायर हमेशा काले रंग के ही क्यों होते हैं या फिर दुनिया भर में काले रंग के ही टायर क्यों होते हैं? जानिए काले टायर के पीछे क्या है राज़। आमतौर पर रबर का रंग स्लेटी होता है लेकिन जब टायर को बनाया जाता है तो इसके रंग में परिवर्तन होता है| टायर बनाने की इस प्रक्रिया को वल्कनाइजेशन कहते हैं। प्राकृतिक रबर यानी लेटेक्स में कार्बन ब्लैक मिलाते हैं ताकि वह मजबूत रहे, रबर जल्दी न घिसे। अगर सादा रबर का टायर 8 हज़ार किलोमीटर चल सकता है तो कार्बन युक्त टायर एक लाख किलोमीटर चल सकता है। काले कार्बन की भी कई श्रेणियां होती हैं। इसमें सल्फर भी मिलाते हैं। कार्बन ब्लैक के कारण यह काला हो जाता है। इससे यह अल्ट्रावॉयलेट किरणों से बच जाता है। यों तो आपने बच्चों की साइकिलों में सफेद, पीले और दूसरे रंगों के टायर देखे होंगे। बीसवीं सदी के पहले-दूसरे दशक में कारों के सफेद टायर भी होते थे। यों हाल के वर्षों तक व्हाइट वॉल टायरों का प्रचलन रहा है, जिनमें टायर का साइड वाला हिस्सा सफेद होता था।

प्रश्न 1. टायर हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

प्रश्न 2. वल्कनाइजेशन प्रक्रिया क्या होती है और इसके क्या - क्या लाभ है?

प्रश्न 3. प्राकृतिक रबड़ का रंग कैसा होता है?

प्रश्न 4. माना कि 45 किलो प्राकृतिक रबड़ और कार्बन के मिश्रण में प्राकृतिक रबड़ और कार्बन की मात्रा 4:5 है तो बताओ कितने किलो प्राकृतिक रबड़ और मिलाने पर यह समानुपाती हो जाएगा?

प्रश्न 5. माना कि 36 किलो कृत्रिम रबड़ में सल्फर और कार्बन 2:4 अनुपात में है तो बताओ कि कितना सल्फर और मिलाया जाये कि सल्फर कार्बन का दोगुना हो जाये?

-मंजू , बी. आर. पी. हिन्दी**,** ब्लाक **ऐलनाबाद , सिरसा**

प्रतिमान 2 - (जहां पहिया है आधारित)

बिहार के मुजफरपुर जिले के आनन्दपुर गांव की निवासी 63 वर्षीय राजकुमारी देवी ने गांव की पगडंडियों पर मीलों साइकिल चलाकर किसान जागरूकता की अलख जगाई ।लोग उन्हें किसान चाची के नाम से पूरे देश में जानते हैं । उन्होंने साइकिल पर घूम-घूम कर आस-पास के लोगों को खेती की नई तकनीक से अवगत करवाकर ,कृषि यंत्रों के उपयोग से लेकर भंडारण और जैविक खाद की जानकारी देकर महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन की अनूठी मिसाल पेश की । राजकुमारी देवी दिनभर 30 से 40 किलोमीटर साइकिल चलाती और गांव में घूमकर किसानों के बीच अपने अनुभव बांटती । राजकुमारी देवी ने अपने आसपास की सैकड़ों महिलाओं को खेती में उतार दिया और उन्हें इस बात की जानकारी दी कि खेती को किस प्रकार लाभकारी बनाया जा सकता है । किसान चाची पहले उपज को सीधे बाजार में बेचती थी , लेकिन बाद में साइकिल पर घर-घर जाकर इसकी बिक्री शुरू की । गांव की महिलाओं को जब पता चला तो वे भी सीखने आने लगी । राजकुमारी देवी गांव-गांव जाकर स्वयं सहायता समूह बनाने लगी । अब तक वे 40 स्वयं सहायता समूह का गठन कर चुकी है । उनके इस काम के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से भी नवाजा । छोटे से गांव से इस मुकाम तक पहुंची किसान चाची ने ये साबित कर दिया कि कोई भी कड़ी मेहनत औऱ लगन से कुछ भी हासिल कर सकताहै ।

प्रश्न 1- महिला सशक्तिकरण से महिलाओं के जीवन में कौन कौन से प्रमुख बदलाव आए हैं? (30-40 शब्दों में)

प्रश्न 2- राजकुमारी देवी के सामने प्रारंभ में कौन सी प्रमुखकठिनाइयां आई होंगी ? (40 शब्दों में)

प्रश्न 3- उपर्युक्त गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? (30 शब्दों में)

प्रश्न 4- एक साइकिल 15 किलोमीटर प्रति घण्टा की चाल से चल रही हो तो 40 किलोमीटर की दूरी तय करने में कितना समय लगेगा ?

प्रश्न 5- एक साइकिल विक्रेता ने 3000 रुपये में साइकिल खरीदकर 4000 रुपये में बेची हो तो उसे कितने प्रतिशत लाभ हुआ ?

- राजेश कुमार , प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय **चमारखेड़ा, उकलाना, हिसार**

प्रतिमान 3 - (जहां पहिया है आधारित)

शकीला शेख कागज के टुकड़ों, अखबार के पन्नों और कार्ड बोर्ड से खेलना जानती है। बिना कैंची के वे कागजों को आकार, रंग और रूप देती है। अगर उन्हें सही मार्गदर्शन नहीं मिलता तो शकीला शेख का बचपन कोलकाता की सड़कों पर गुमनामी में ही बीत जाता। शकीला ने अपने अंदर कैद कलाकार को आजाद किया और अपनी कला को जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका तक पहुंचाया है। कभी सब्जी मंडी में बचपन बिताने वाली शकीला शेख आज अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जानी मानी कोलाज आर्टिस्ट है। शकीला ने अपनी आर्थिक स्थिति को कभी अपने सपनों के बीच आने नहीं दिया| शकीला कहती है,"कोलकाता की सड़कों पर मैं भूखे पेट सोई, भीषण गरीबी देखी लेकिन मैंने कभी बड़ा बनने का सपना नहीं छोड़ा। जिंदगी में हालात कैसे भी आए, हमें खुद पर भरोसा रखना चाहिए और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए"।शकीला शेख उस महिला का नाम है जिसने शिक्षा और हुनर से अपना नाम रोशन किया। गरीबी से परेशान शकीला की मां ने उसकी शादी 12 साल की उम्र में कर दी, लेकिन शकीला ने हार नहीं मानी और नतीजा आज दुनिया के सामने है।

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

प्रश्न1. सही मार्गदर्शन के अभाव में हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में किन किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

प्रश्न2. शकीला ने अपने अंदर कैद कलाकार को कैसे आजाद किया? अपने विचार लिखें|

प्रश्न3. शकीला ने एक कागज के टुकड़े से तीन आकृतियां बनाई, आयत, त्रिभुज, और वृत्त जिनके क्षेत्रफल 6 वर्ग सेंटीमीटर, 22 वर्ग सेंटीमीटर और 2 वर्ग सेंटीमीटर हैं अगर शकीला ने 40 वर्ग सेंटीमीटर का कागज लिया हो तो बताओ अब शकीला के पास कितना कागज बचा?

प्रश्न4. एक ठेले पर विभिन्न प्रकार की सब्जियां रखी हुई हैं जिसमें से शकीला ने 15 रुपए प्रतिकिलो के हिसाब से 2 किलो गोभी खरीदी और 10 रुपए प्रति किलो के हिसाब से 5 रुपए किलो आलू खरीदें तो बताओ शकीला के पास कितने रुपए बचे,जबकि शकीला के पास कुल 300 रुपए थे?

प्रश्न 5. हमारे समाज में महिलाओं के प्रति विपरीत परिस्थितियों होने के बावजूद भी महिलाएं अपनी तथा समाज की दिशा कैसे बदल सकती हैं?

-ओमप्रकाश , प्रवक्ता, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिट्ठीसुरेरां

प्रतिमान 4 - (जहां पहिया है आधारित)

उसका जीवन तालाब में ठहरे हुए पानी की तरह था। तालाब में लहरें तो उठती मगर एक किनारे से दूसरे किनारे तक। जीवन में कोई गतिशीलता नहीं। सुबह से लेकर शाम तक ,शाम से लेकर सुबह, वही दिनचर्या हर रोज दोहराई जाती। उनका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं था। भाई का तार आता तो उसे पढ़ नहीं पाती। सब्जी वाले से घीया ,तोरी का भाव करते समय हिसाब -किताब न आता था । कब 2 रुपए ज्यादा ले गया, पता ही नहीं चलता था। मगर मालती के मन में काले -काले अक्षरों को जानने की बहुत इच्छा थी लेकिन पिता ने उसे यह हक नहीं दिया और ना ही पति ने । उन दोनों ने शिक्षा के महत्व को नकार दिया और कहा कि पढ़ लिखकर कौन सा कलेक्टर बन जाओगी, करना तो वही चूल्हा -चौका है। अपने लिए तो ठीक था। लेकिन मालती ने अपनी बेटी के लिए प्रयास किया। वह अपनी बेटी के जीवन में गतिशीलता चाहती थी। उसे आसमान छूते देखना चाहती थी। इसलिए उसने अपने पति को मनाया। लेकिन शर्त थी कि शिक्षिका घर आकर पढ़ाएगी। राधा स्कूल नहीं जाएगी। शिक्षिका ने मालती का साथ दिया और वह राधा को पढ़ाने घर आने लगी। दसवीं कक्षा उस समय आई ए एस से कम न थी। मालती का साथ, राधा व शिक्षिका की मेहनत रंग लाई। राधा ने अपने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अखबारों में नाम आया। गांव वालों ने पढ़ा जो लोग बगावत करते थे,वह आज प्रशंसा करते नहीं थकते। मगर कुछ लोग आज भी उसी सोच पर थे कि लड़कियों को नहीं पढ़ाना चाहिए। उन्हें बाहर नहीं भेजना चाहिए। मगर नाम और प्रशंसा को कौन नहीं चाहता। इस घटना से ऐसा लगता था मानो लोग इस राह का इंतजार कर रहे थे। धीरे -धीरे लोगों ने अपनी लड़कियों को विद्यालय भेजना शुरू किया। पुरानी सोच के लोग इसे उचित न मानते थे लेकिन अब लड़कियों के मन में पढ़ने व आसमान छूनेके पंख लग चुके थे। जहां गलियों में एक लड़की बस्ता लिए नजर ना आती थी, आज वही 10 या 15 के समूह में दिखाई देने लगी। शिक्षा प्राप्त करना मानो उनका अधिकार बन गया। अपने जीवन के अस्तित्व से भी वाकिफ हो चुकी थी । अब मालती जैसी औरतें भी अपने आलू ,प्याज के मोल -तोल का भाव खुद करने लगी थी क्योंकि घर में शिक्षा का प्रसार हो रहा था। देखते देखते इस मुहिम ने एक आंदोलन - सा गांव में ला दिया।अब इनके भाव -विचार अपनी उड़ान भर चुके थे। अब इनका जीवन ठहरा तालाब,नहीं बहती नदी के समान सबको शीतलता व समृद्धि देने वाला था। इस आंदोलन ने औरतों के जीवन में गतिशीलता भर दी।

प्रश्न- 1 हमारा जीवन ठहरे हुए पानी की तरह नहीं बल्कि बहती नदी के समान होना चाहिए,क्यों?

प्रश्न- 2 साइकिल चलाना, शिक्षा की ओर अग्रसर होना सचमुच एक आंदोल नही था,जो काफी हद तक सफल रहा। आज भी गांवों में पर्दा प्रथा विद्यमान है। इस प्रथा को दूर करने के लिए आप क्या प्रयास करेंगे? लिखिए।

प्रश्न -3 शिक्षक का हमारे जीवन में अहम योगदान होता है, कैसे?

प्रश्न -4 मालती सब्जी वाले से घीया का भाव पूछती है तो उसने उसे कहा कि वह जिस भाव में खरीदकर लाया है, उसी में दे रहा है। लेकिन वह 1000 ग्राम के स्थान पर 800 ग्राम वाट का प्रयोग करता है तो बताओ उसे कितने प्रतिशत लाभ होता है?

(क) 15% (ख) 22% (ग) 25% (घ) 28%

प्रश्न -5 9 आलूओं का मूल्य 5 प्याजो के मूल्य के बराबर है। 5 प्याजो का मूल्य तीन नींबूओं के मूल्य के बराबर है। यदि एक आलू का मूल्य 2 रुपए हो, तो 4 नींबूओं का मूल्य बताइए?

-नीलम वत्स, प्रवक्ता, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भैंसवालकला , गोहाना ,सोनीपत

प्रतिमान 5 - (जहां पहिया है आधारित)

पहिया शायद मनुष्य का सबसे बड़ा आविष्कार है | लगती तो यह बहुत साधारण सी चीज है, लेकिन यह गति का आधार है | किसी चतुर आदमी ने इस सीधी –सादी वस्तु का आविष्कार किया जो कि आज हर जगह और हर काम में मनुष्य का सबसे आवश्यक उपकरण बन गई है | पहियों को भी विज्ञान के साथ आगे बढ़ना था, लेकिन जितना विकास पहिए का हुआ, उतना ही विकास औरतों का भी हुआ | पहिए की तरह गोल-गोल घूमती जिंदगी की चक्की में पिसती औरतों को आजादी का एहसास पहिए से ही मिला है | महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की कहानी पहिए से ही शुरू हुई लगती है | घर की चक्की से लेकर आसमान में जहाज उड़ाने तक का सपना देखने का अधिकार औरतों को पहिए के कारण ही मिल सका है | दैनिक जीवन के कार्य हो या कमाई के लिए जाना हो महिलाएं अब स्वयं करती हैं | बदलते समाज के साथ-साथ औरतों ने अपने आपको भी बदल लिया है | साइकिल, स्कूटर, ऑटोकार, बस, ट्रेन, जहाज, कौन सा ऐसा साधन है जिसे औरतें नहीं चलाती है | गृह कार्य निपटा कर जब वे पहिए पर सवार होती है तो मानो उन्हें संसार की सबसे बड़ी खुशी मिल जाती है |

प्रश्न 1: औरतों को जीवन में किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है और क्यों ?

प्रश्न 2: पहिए ने महिलाओं के जीवन पर क्या प्रभाव डाला है ? उनके जीवन में पहिए की क्या भूमिका है ?

प्रश्न 3: गद्यांश में लिखे साधनों को छोड़कर पहिए से निर्मित अन्य साधनों के नाम लिखो ?

प्रश्न 4: यदि पहिए का व्यास 20 सेंटीमीटर है तो त्रिज्या क्या होगी?

क. 5 सेंटीमीटर ख. 10 सेंटीमीटर ग. 7 सेंटीमीटर घ. 40 सेंटीमीटर

प्रश्न 5: यदि साइकिल की गति 3 किलोमीटर प्रति घंटा है तो वह 2 घंटे में कितनी दूरी तय करेगी?

क. 6 किलोमीटर ख. 4 किलोमीटर ग. 9 किलोमीटर घ. 10.5 किलोमीटर

- प्रोमिला, ब्लाक राई, सोनीपत

प्रतिमान 6 - (जहां पहिया है आधारित)

भारत में 1947 के बाद साइकिल का दौर आया। यह साइकिल शहर की सड़कों से लेकर गांव की पगडंडियों तक दौडऩे लगी। सरल, किफायती और पर्यावरण के लिए मुफीद साइकिल दुनिया में छाई तो इसकी महत्ता बढ़ गई। साइकिल के पहियों ने आर्थिक तरक्की में भी अहम भूमिका निभाई।

1947 में आजादी के बाद अगले कई दशक तक देश में साइकिल यातायात व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा रही। खासतौर पर 1960 से लेकर 1990 तक भारत में ज्यादातर परिवारों के पास साइकिल थी। यह व्यक्तिगत यातायात का सबसे ताकतवर और किफायती साधन था। गांवों में किसान साप्ताहिक मंडियों तक सब्जी और दूसरी फसलों को साइकिल से ही ले जाते थे। दूध की सप्लाई करने वाले दूधिये गांवों के पास से कस्बाई बाजारों तक साइकिल के जरिये ही दूध की सप्लाई करते थे। मास्टर जी स्कूल भी साइकिल पर जाते थे। डाक विभाग का तो सारा काम ही साइकिल के बल पर चलता था। पोस्टमैन साइकिल से चिट्ठियां बांटते हैं। जमाना बदला और कूरियर सेवाएं ज्यादा भरोसे मंद बन गईं, लेकिन साइकिल की अहमियत यहां भी खत्म नहीं हुई। बड़ी संख्या में कूरियर बाँटने वाले भी साइकिल का इस्तेमाल करते हैं।

साइकिल चलाने के बहुत से शारीरिक लाभ भी हैं। वजन घटाने से लेकर मसल्स बनाने तक साइकिल बहुत फायदे मंद होती है। यह पूरे शरीर को मजबूत बनाती है। इससे फेफड़े अच्छी प्रकार से काम करने लगते हैं। पैरों की मांसपेशियां मजबूत बनती है। रोज साइकिल चलाने से दिल की धड़कन बढ़ती है और रक्त का प्रवाह ठीक होता है। इससे दिल से जुड़े रोगों का खतरा कम हो जाता है। यह शरीर के प्रतिरोधी तंत्र को मजबूती प्रदान करती है। डायबिटीज की बीमारी से बचाती है। साइकिल के नियमित इस्तेमाल से कैंसर का खतरा 45 फीसदी और दिल की बीमारियों का खतरा 46 फीसदी तक कम हो जाता है। शायद यही वजह है कि चीन के बाद दुनिया में आज भी सबसे ज्यादा साइकिल भारत में बनती हैं।

प्रश्न1 कुछ प्रसिद्ध साइकिल निर्माता कंपनियों के नाम बताइए?

प्रश्न2 साइकिल चलाने के क्या - क्या फायदे होते हैं?

प्रश्न3 अपने समय में साइकिल ने देश के आर्थिक विकास में किस प्रकार योगदान दिया?

प्रश्न4 यदि यातायात के साधन के रूप में अधिक से अधिक साइकिल का प्रयोग किया जाए तो इसका हमारे पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रश्न 5 एक साइकिल निर्माता कंपनी पहले 75000 साइकिले प्रतिमाह बनाती थी।लेकिन अब वह 20000 साइकिल ही प्रतिमाह बनाती है। बताइए साइकिल की दर में कितने प्रतिशत की कमी आई ?

-रोश्नी देवी बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक नाहर, रेवाड़ी

प्रतिमान 7 - (जहां पहिया है आधारित)

मुंबई की भाग दौड़ की जिंदगी में यदि आपकी कोई मुश्किल हलकर सकते हैं तो वह है मुंबई के डिब्बे वाले। मुंबई की लोकल ट्रेन में थाने के डिब्बों के साथ चढ़ना एक बड़ा मुश्किल काम है क्योंकि इतनी भीड़ में खुद चढ़ जाना मुश्किल है, साथ में सामान हो तो और भी मुश्किल है। यह लोग आपके घर से आपके कार्यालय तक घर का भोजन पहुंचा ने का कार्य करते हैं। ये पिछले 130 वर्षों से लगभग 5000 कर्मचारी दो लाख से भी ज्यादा कर्मचारियों को खाना पहुंचाते हैं। सन 1890 में पहली बार मुंबई में डिब्बे वालों की शुरुआत हुई। जब उस दौर में अंग्रेज व फ्रांसीसी समुदाय को इसकी सबसे अधिक जरूरत होती थी। गृहिणी सुबह वक्त से उठकर अपने पति के लिए खाना बनाती थी तो उन्हें काफी परेशानी होती थी तथा दोपहर तक खाना ठंडा भी हो जाता था। उस समय आज की तरह पकाने वगर्मरखने के आधुनिक साधन नहीं होते थे। महादेव भाऊजी नाम के व्यक्ति ने 100 आदमियों का खाना पहुंचाने का कार्य शुरू किया। उसने न्यूटन कंपनी के नाम से यह काम शुरू किया और आज दो लाख से भी ज्यादा लोगों को मुंबई में घर से कार्यरत तक खाना पहुंचाया जाता है। इनके वहां अपने कार्यालय भी हैं। अनपढ़ व कम पढ़े लिखे भी यह कामकर सकते हैं। हर डिब्बे वाले की आय बराबर है। डिब्बों पर कुछ निशान होते हैं व लिखा भी होता है, जिसे अनपढ़ व कम लिखा पढ़ा लिखा आदमी भी समझ सकता है। इन निशानों व पते की सहायता से ये प्रतिदिन घर का खाना कर्मचारी के कार्यालय तक पहुंचा देते हैं तथा अतिरिक्त खाली डिब्बे को कार्यालय से घर पहुंचा देते हैं। अब तो देश विदेश में भी यह कारगर है। इन्हें अनेक संस्थाओं ने मान्यता दी है। यहां तक की बी बी सी ने भी इनको अच्छा बताया है।

इन पर फिल्म भी बन चुकी है। ये सादे कपड़ों में रहते हैं।सफेद कुर्ता, सफेद पजामा, सिर पर गांधी टोपी, पैर में चप्पल तथा गले में माला पहनते हैं। विट्ठल भगवान में आस्था रखते हैं। प्रिंस चार्ल्स जब भारत आए तब वे इनकी सेवा के मुरीद हो गए। उन्होंने अपनी शादी में इनको आने का न्योता दिया। न्यूटन कंपनी के अध्यक्ष व कुछ डिब्बे वाले उनकी शादी में इंग्लैंड गए थे। यह पिछले एक सौ तीस वर्षो से घर से कार्यालय पहुंचते समय कभी लेट नहीं होते, चाहे कितनी भी वर्षा , गर्मी व उमस का मौसम हो। एक टिफिन छह हाथों से गुजरता है और खाली टिफिन घर पहुंचाया जाता है। इसमें गलती की संभावना न के बराबर है। आजकल विदेशों में भी इनको सराहा जा रहा है। इनकी कार्य शैली बहुत अच्छी है। इनमें एक मजबूत टीम भावना है। ये अपनी कमाई का कुछ हिस्सा एक ट्रस्ट को भी देते हैं। इन्होंने जीवन में केवल एक ही बार एक दिन अन्ना हजारे के पक्ष में हड़ताल की थी । इनका ध्येय है- अन्न पूर्णा देवोम भवः। यह सेवा मुंबई में कार्य करने वालों के लिए जीवन रेखा है।

प्रश्न1.प्रिंस चार्ल्स कौन है ?
प्रश्न२ . अंग्रेज व फ्रांसीसी समुदाय के लोगों को सबसे ज्यादा डिब्बे वालों की जरूरत क्यों पड़ी?
प्रश्न3. संस्था द्वारा एक टिफिन को पहुंचाने में रूपये 1000 महीने के लिए जाते हैं। दो लाख टिफिन पहुंचाने पर संस्था को कितनी आमदनी हुई?
प्रश्न4. टिफिन पहुंचाने वाले प्रत्येक कर्मचारी की आमदनी रूपये 40000 मासिक है। संस्था में 5000 कर्मचारी हैं। प्रत्येक कर्मचारी आमदनी का 10% संस्था को दान देता हैं। संस्था के पास महीने में दान की कितनी राशि जमा हो जाती है?
प्रश्न5. डिब्बे वालों की कार्य शैली के विषय में बताओ।

-गजराज सिंह, **प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झाल,** रेवाड़ी

प्रतिमान 8 - (जहां पहिया है आधारित)

महिलाओं के उत्थान में स्वयं सहायता समूह योजना भी महत्वपूर्ण योगदान कर रही है। इनके समूह में कार्य करने से महिलाओं के स्वाभिमान , गौरव, व आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप महिलाओं की क्षमताओं में बढ़ोतरी होती है। स्वयं सहायता समूह अपनी छोटी - छोटी बचत करके व बैंक से ऋण लेकर रोजगार की गतिविधियां चलाते हैं। महिला स्वयं सहायता समूह को गरीबी उन्मूलन कार्य क्रम की रीढ कहा जाए तो गलत नहीं होगा। स्वयं सहायता समूह को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने पुरस्कार की व्यवस्था की है। केंद्र सरकार ने भी अपने बजट में मुद्रा योजना और स्टैंड अप इंडिया के तहत ऋण देने की योजना बनाई है। इस प्रकार की योजनाओं से जुड़ कर ही मजदूरी के लिए विवश महिलाओं की स्थिति में सुधार कर उन्हें हुनर मंद बनाकर सक्षम किया जा सकता है।

प्रश्न 1 स्वयं सहायता समूह योजना का उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न 2 स्वयं सहायता समूह महिलाओं की स्थिति में सुधार कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 3 केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय स्वयं सहायता समूह को प्रोत्साहित क्यों करता है ?

प्रश्न 4 स्वयं सहायता समूह के कार्य क्या है ?

प्रश्न 5 कोई स्वयं सहायता समूह सरकार से किसी योजना के तहत रूपये 500000 का 7% वार्षिक ब्याज दर पर लेता है तो उसे 3 वर्ष के बाद कितना रुपया चुकाना पड़ेगा ?

-डॉ सुरेन्द्र कुमार, प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोसली , नाहड़ (रेवाड़ी)

प्रतिमान 9 - (जहां पहिया है आधारित)

साइकिल को आज स्वास्थ्य ठीक रखने की मशीन कहा जाता है । पहले समय में लोग साइकिल की सवारी खूब करते थे । जब किसी मनुष्य को गांव से शहर आना होता तो साइकिल पर आते थे । बच्चों में साइकिल चलाने का खूब शौक था । महिलाएं भी अच्छे से साइकिल चला लेती थी । साइकिल का भी एक जमाना था । साइकिल का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए किया जाता था । पहले साइकिल चलाने से लोगों के स्वास्थ्य बिल्कुल सही रहते थे । कभी भी बीमार नहीं होते थे ।

लेकिन आज के समय साइकिल धीरे धीरे लुप्त होते जा रहे है । आज के लोग फैशन की दुनिया में इतना खो गए कि साइकिल तक अपने घर में रखना पसंद नहीं करते । आज के युवा वर्ग तो साइकिल चलाने में शर्म महसूस करते है।जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए । आज बाजार में साइकिल की दुकान कम देखने को मिलती है । बड़े शहरों में लोग तो साइकिल तक चलाना पसंद नहीं करते । लेखक कहता है कि साइकिल का प्रयोग हमें जीवन में करना चाहिए । ताकि हम स्वस्थ रह सकें । साइकिल का अनेक फायदे है । शरीर स्वस्थ रहता है । कोई खर्च नहीं होता । कही गिर भी जाये तो ज्यादा चोट नहीं लगती । यदि कोई व्यक्ति चाहे तो साइकिल का बिजनेस शुरू कर सकता है ।

प्रश्न **1.** आज के युग में साइकिल का प्रयोग कम क्यों होने लगा **?**

प्रश्न **2.** साइकिल का प्रयोग हमें जीवन में क्यों करना चाहिए **?**

प्रश्न **3.** हरियाणा में सबसे पहले साइकिल का कारखाना कहाँ लगा **?**

प्रश्न **4.** 'आज का युवा वर्ग साइकिल चलाना पसंद नहीं करता ' इस कथन का क्या आशय है **?**

प्रश्न **5. 12** पुरुष या **18** महिलाएं किसी खेत की फसल को **14** दिनों में काट सकते हैं । पुरुष और महिलाओं की कार्य क्षमता का अनुपात बताओ

- रविन्द्र कुमार**,** बी. आर. पी. हिन्दी**,** ब्लाक तावडू**,** नुहँ

प्रतिमान 10 - (जहां पहिया है आधारित)

"कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालों यारो।"

अर्थात् यदि आप में हौसला है, लग्न है, दृढ निश्चय है तो आप आसमान को भी झुका सकते हो। यह कार्य पुरूष वर्ग ही करें महिलाएं ऐसा नहीं कर सकती, ये गुजरे जमाने की बाते हैं। घरेलू काम में व्यस्त रहने वाली महिलाएं चार दीवारी से निकल खुद का व्यवसाय चला रही हैं। सुमन एक गरीब विधवा, 5 बच्चों की माँ, घर में गुजारे के लिए कुछ नहीं। पति की मृत्यु के बाद चारों ओर अंधेरा देख सुमन स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई तथा उसने सिलाई मशीन का प्रशिक्षण लिया। घर पर ही सिलाई का कार्य शुरू किया।कुछ दिनों के बाद सुमन स्वयं प्रशिक्षक बन गई तथा अपने गांव की महिलाओं को प्रेरित किया तथा सिलाई – कढाई का प्रशिक्षण दिलाया। कुछ महिलाओं ने तो सुमन के साथ प्रशिक्षण देना भी शुरू कर दिया। इस कार्य के लिए उनको आस–पास के गांवों में भी बुलाया जाने लगा।सिलाई मशीन के पहिये ने सुमन ही नहीं हजारों अन्य महिलाओं के जीवन को गति प्रदान की । अब वे आत्मनिर्भर बन गईहै।अपनी जेब खर्च तथा दूसरे छोटे– 2 खर्च के लिए पति के सामने हाथ नहीं फैलाती। सुमन ने तो प्रशिक्षक बनकर घर के सभी खर्चों का निर्वहन किया। अब सुमन एक आदर्श बन गई है तथा उसके कार्यों को उदाहरण के रूप में दूसरी महिलाओं को सुनाया जाता है। अर्थात् 'जहाँ चाह वहाँ राह।'

प्र01 गद्यांश में वर्णित सुमन के बारे में 5 पंक्तियाँ लिखो।
प्र02 मंजिल प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है ?
प्र03 आजकल कौन–2 से कार्य है जो महिलाएं भी पुरूषों के समान कर रही है ?
प्र04 एक प्रशिक्षित महिला एक महिने में 10 महिलाओं को प्रशिक्षित करती हो तो एक वर्ष में वह कुल कितनी महिलाओं को प्रशिक्षित करेगीं ?
प्र05 सुमन को प्रशिक्षण देने का वेतन 20,000 रू0 प्रति महिना तथा सिलाई का मेहनताना 3000 रू0 प्रति मास मिलता हो तो उसकी वार्षिक आय कितनी है ?

– मामला राम, **प्रवक्ता,** हिन्दी, रा. व. मा. वि. सोंगल, कैथल,

प्रतिमान 11 - (जहां पहिया है आधारित)

टीकमगढ़, बुंदेलखंड के ग्रामीण परिवेश में अब महिलाओं की सोच बदल रही है। पारंपरिक पारिवारिक बेड़ियों को तोड़कर वह भी अपने परिवार को आर्थिक रूप से संभल प्रदान करने अब पुरुषों से भी आगे काम कर रही है। इसका ताजा उदाहरण ग्राम विगोड़ा की महिलाओं ने दिया है। इनके द्वारा बनाई गई अगरबत्ती से जहां हर घर सुगंधित हो रहा है , वही इनका परिवार भी महक रहा है। सरकार के आजीविका मिशन से जुड़ने के बाद थोड़ी-थोड़ी बचत कार अपनी पूंजी बनाने वाली इन महिलाओ ने अब अगरबती निर्माण का काम शुरु कर दिया है। इनके इस काम की जहां गांव सहित पूरे क्षेत्र में तारीफ की जा रही है ,वहीं इनकी अगरबत्ती पूरे प्रदेश में बेची जा रही है। उनका कहना है कि प्रतिदिन घर में जरूरी काम निपटा कर सभी महिलाएं तीन से 4 घंटे तक अगरबत्ती बनाने का काम करती हैं।उनके द्वारा आजीविका के नाम से जहां खुद की अगरबत्ती बनाई जा रही है , वही बाहर की कई कंपनियां भी उन्हें काम दे रही हैं।बाहर की कंपनियां कच्ची सामग्री उपलब्ध कराती हैं और उनको एक किलो अगरबत्ती बनाने पर 15 से 20 रू मजदूरी देती है।अगरबत्ती निर्माण आरंभ करने के बाद से जहां परिवार को आर्थिक सहयोग कर रही हैं। इसके साथ-साथ देश के आर्थिक विकास का पहिया भी घूम रहा है।

प्रश्न 1:-पारंपरिक परिवारिक बेड़ियों को तोड़ने का क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2:-टीकमगढ़ बुंदेलखंड के ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर कैसे हुई ?

प्रश्न 3 :-इनके द्वारा बनाई गई अगरबत्ती से जहां हर घर सुगंधित हो रहा है, वहीं इनका परिवार भी महक रहा है। उनका परिवार कैसे महक रहा है?

प्रश्न 4:-एक महिला एक दिन में 8 किलो अगरबत्ती बनाती है और अगरबत्ती बनाने की मजदूरी 20 रू प्रति किलो है तो उसकी 28 दिन की मजदूरी कितनी होगी?

प्रश्न 5:-यदि एक महिला प्रतिदिन 4 घंटे अगरबत्ती बनाने का काम करती है तो 1 महीने में वह कितने मिनट काम करती है?

- डॉ. दलबीर सिंह **प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय** बारोदा, उचाना , जींद

प्रतिमान 12 - (जहां पहिया है आधारित)

जब आदिमानव ने पहली बार किसी पेड़ के लट्ठर को गतिमान देखकर पहिये की कल्पना की होगी , तब शायद उसे भी इसकी अहमियत का अंदाजा नहीं रहा होगा आज यदि संसार गतिमान है तो सिर्फ | बड़े बड़े उद्योग धंधों में मशीनें चल | संचार के साधन दौड़ रहे हैं तो पहिये के कारण | पहिये के कारण ,यानी जहाँ पहिया है | रही हैं तो भी पहिये के कारण वहां गति है और जहाँ गति है, वहां जीवन है | पहिये के बिना आज के जीवन की कल्पना करना शायद | पहिया आज गति का पर्याय बन गया है ,पहिया प्रेरणा देता है | काफी कठिन रहे सदा गतिमान रहने की सदा मंजिल की और अग्रसर रहने , ,की तभी तो राष्ट्रध्वज में भी चक्र यानी पहिया विद्यमान है |

दीपालपुर गाँव के अधिकाँश लोग काम की तलाश में शहर की और पलायन कर रहे थे | खेती अब घाटे का सौदा बनती जा रही थी | शहर में मजदूरी कर जैसे तैसे अपनी आजीविका चला रहे थे | गाँव जो कभी चहकता हुआ नजर आता था अब वीरान सा दिखाई देता है | यही हाल था जब विश्वास कई सालों बाद गाँव में आया | एक दिन कुम्हारों की बस्ती में घासी कुम्हार के घूमते हुए चाक को देखकर उसकी आँखें चमक उठी | गाँव के कुछ अनुभवी व्यक्तियों के सामने उसने अपनी योजना रखी तो कोई सकारात्मक संकेत नहीं मिला | अब वह घासी के पास गया और उसके सामने एक प्रस्ताव रखा कि घासी विश्वास की मांग के अनुसार मिटटी के बर्तन जैसे मटका, सुराही, दिए, तवे आदि बनाएगा और विश्वास उसकी लागत के साथ साथ बर्तनों की बिक्री से हुए लाभ का 30 टका भी देगा | घासी के लिए ये कोई घाटे का सौदा नहीं था | घासी विश्वास के निर्देशानुसार अपने काम में जुट गया और विश्वास अपने काम में |

विश्वास ने तकनीक का प्रयोग करते हुए इन्टरनेट के माध्यम से मिटटी के बर्तनों के फायदों और उनकी सुन्दरता का प्रचार करना शुरू कर दिया | पहली खेप के परिणाम ज्यादा खुश करने वाले नहीं थे |मुनाफा लगभग नहीं के बराबर था | फ्रीज़ के ठन्डे पानी की तुलना भला मटके के पानी से कैसे की जा सकती थी ? विश्वास ने मिटटी के मटकों के फायदों से सम्बंधित फायदों की और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के नुकसानों की तुलनात्मक सूची तैयार की और उसके पर्चे छपवाकर गाँव और शहर सभी जगह बंटवाए | कोशिशें कामयाबी की ओर बढ़ने लगी और पहिया यानी चाक भी तेजी से चलने लगा | लगभग छह महीने के बाद जब घासी ने आंकलन किया तो पाया कि वह साल भर में जितना कमाता था उतना तो वह अभी तक कमा चुका था | अब आगे दिवाली आ रही थी विश्वास ने पहले ही इन्टरनेट और अखबारों में दीयों के आकर्षक नमूनों का प्रचार करना शुरू कर दिया था | घीसू ने भी दीयों को नए रूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ी | नए रूप वाले दीयों की मांग काफी बढ़ने लगी जो अकेले घासी के बस की बात नहीं रह गई थी। इसलिए हरिया, मनोहर और जतिन भी साथ हो लिए | बदलू और मांगे के टम्पू के पहिये भी अब लगातार घुमने लगे थे | इस बार दिवाली पर दीपालपुर गाँव में कई सालों की लड़ियों की टिमटिम को मिटटी के दीयों की रौनक ने फीका कर दिया | गाँव में चहल पहल एक बार

फिर बढ़ने लगी, चिंता की लकीरों वाले चहेरों पर एक छोटी सी मुस्कराहट की लकीर भी खींचने लगी थी | ये सब शायद इसलिए संभव हो पाया कि वहां जो पहिया है, वह अब गतिमान हो गया है |

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

1. इनमें से किसमें पहिये का कोई रूप मौजूद नहीं हैं ?

(i) बिजली का पंखा (ii) गेहूं पीसने की चक्की (iii) थाली (iv) मोबाइल फोन

2. आपके अनुसार फ्रीज़ के पानी और मटके के पानी में से कौन सा स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है ?

3. घासी ने दिवाली पर 10000 दीये बनाए | इतने दीये बनाने में उसकी लागत 5000 रूपए आई | बताइए-

(i) वह एक दीया कितने में बेचे कि उसे 5000 रूपए का फायदा हो ?

4 यदि उसके 2000 दीये टूट जाएँ तो कितने % दीपक टूट गए

5 . आपके अनुसार वर्तमान युग में कोई वस्तु बेचने के लिए विज्ञापन कितना आवश्यक है ?

|

-जोगिन्दर सिंह, **प्रवक्ता**, रा.उ.वि.सिधनवा, बहल, भिवानी ।

प्रतिमान 13 - (जहां पहिया है आधारित)

महाराष्ट्र का गांव सामाजिक बदलाव की राह में सबसे अव्वल है। यह गांव हर महीने से एक आदर्श गांव है और शायद महिला सशक्तिकरण का एक बेजोड़ उदाहरण भी। महाराष्ट्र के लातूर में एक गांव है- आनंदवाडी जो सामाजिक बदलाव की राह में सबसे अव्वल है। 635 लोगों की आबादी वाला यह गांव एक आदर्श गांव है। एक ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो इस गांव को सबसे अलग बनाती है। जैसे यह गांव अपराध मुक्त है। 15 सालों से यहां एक भी पुलिस के सदर्ज नहीं हुआ है। स्वास्थ्य के लिए यह इतने जागरूक है कि यहां धूम्रपान, शराब और तंबाकू पर प्रतिबंध है। यहां की व्यस्क आबादी ने मेडिकल रिसर्च के लिए अपने अंगदान भी कर दिया है। इस गांव में किसी की भी बेटी की शादी हो। सभी गांव वाले शादी के खर्च में बराबर हिस्सेदार होते हैं। यही नहीं पिछले साल से यहां सामूहिक विवाह का आयोजन भी किया जाने लगा है। सबसे अहम यह है कि यहां के सभी 165 घरों पर महिलाओं के नाम है। न सिर्फ नाम बल्कि घरों और खेतों का मालिकाना हक भी अब महिलाओं को दिया है। गांव के लोगों ने अपनी समझदारी से ग्राम सभा में यह निर्णय लिया । इस गांव के लोगों की मानसिकता का अंदाजा इसी बात से लगा लीजिए कि वे नहीं चाहते कि महिलाएं किसी पर भी निर्भर रहें। ग्राम सभा के एक सदस्य नैनो बाजाने का कहना है कि हम हर दीपावली पर माता लक्ष्मी को अपने घर लाते हैं। उसी तरह हमें अपने घर की लक्ष्मी को भी सम्मान देने का निर्णय लिया। महिलाओं को किसी पर निर्भर होने की जरूरत क्यों हो। जब वह घर चलाती हैं तो वह घर की मालकिन क्यों नहीं हो सकती । महिला सशक्तीकरण की दिशा में इससे अच्छा उदाहरण ओर क्या होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महिलाओं को इस दिशा में ले जाने वाले खुद पुरुष ही हैं । बस उनकी मानसिकता संकीर्ण नहीं है,बल्कि वह समय के साथ चलने वाले हैं।

प्रश्न 1-आपके शहर या गांव में स्वास्थ्य संबंधी क्या - क्या कार्य किए जा रहे हैं?

प्रश्न 2- आपके घर या आस पड़ोस में किन - किन कार्यों में लोगों का सामूहिक योगदान होता है?

प्रश्न 3- आपके विचार में महिला सशक्तिकरण के लिए क्या - क्या कार्य किए जा सकते हैं?

प्रश्न 4 -निम्न सूचना दर्शाने वाला एक पाई चार्ट बनाओ। यह सारणी महिलाओं द्वारा पसंद किए जाने वाले कार्यों को दर्शाती है
तो खेती और पशुपालन में लगी महिलाओं में अनुपात क्या है

किया गया कार्य	महिलाओं की संख्या
कपड़े रंगना	18
खेती करना	9
पशु पालना	6
भोजन बनाना	3

प्रश्न 5- वर्ष 2009 के अंत में किसी गांव की जनसंख्या 20000 थी। इसमें 5% वार्षिक दर से हुई थी हुई तो वर्ष 2010 के अंत में उस गांव की जनसंख्या क्या होगी?

- **नीतू,प्रवक्ता,** रा.उ.वि. गोला ,**साहा, अम्बाला**

प्रतिमान 14 - (जहां पहिया है आधारित)

भारत के पूर्वोत्तर में नागालैंड के दक्षिण और मिज़ोरम के उत्तर में बसा हैं खूबसूरत राज्य , मणिपुर। इसके पश्चिम में असम और पूर्व में म्यांमार की अंतर्राष्ट्रीय सीमा है। नन्हें से मणिपुर का साहित्य , प्राचीन इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं। इस राज्य की राजधानी इम्फ़ाल में एशिया की सबसे बड़ी महिला मार्केट है जिसे इमा कैथेल या मदर मार्केट के नाम से जाना जाता है। मणिपुरी भाषा में इमा का मतलब होता है माँ और कैथेल का मतलब होता है बाज़ार। लगभग 500 साल पुराने इस बाज़ार को केवल महिलाएं चलाती हैं। कहा जाता है कि मणिपुर में पुराने समय में पुरुषों को खेती करने और युद्ध लड़ने के लिए दूर भेज दिया जाता था और ऐसे में महिलाएं ही घर चलाती थी । तभी से इस बाज़ार की शुरुआत हुई। इस बाज़ार में 10 हज़ार से ज्यादा महिलाएं काम करती हैं और इस बाज़ार में पुरुष कोई समान नहीं बेच सकते। दुनिया का शायद यह इकलौता बाज़ार होगा जहां सिर्फ और सिर्फ महिला दुकानदार ही हैं। यह मार्केट साढ़े तीन किलोमीटर के दायरे में बसा हुआ है और तीन इमारतों में बंटा हुआ है। इतने लंबे समय से इस बाज़ार को इतने अच्छे ढंग से चलाकर मणिपुर की महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण की एक बेहतरीन मिसाल पेश की है। कई महिला आंदोलनों का गवाह रहा यह इमा बाज़ार मणिपुर की आर्थिक गतिविधियों के साथ -साथ राजनैतिक गतिविधियों का भी बड़ा केंद्र है । साथ ही अपनी तरह का यह अनूठा बाज़ार मणिपुर की महिलाओं की शक्ति , गौरव, संघर्ष और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी है। इन महिलाओं का अपना एक संगठन भी है , जो जरूरत पड़ने पर इन्हें लोन भी देता है

उपरोक्त गदयांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. इमा कैथेल या मदर मार्केट की शुरुआत किस शताब्दी में हुई?
    क. 15वीं
    ख. 16वीं
    ग. 17वीं
    घ. 18वीं
2. मणिपुर राज्य के साथ किस देश की सीमा लगती है?
3. आपके अनुसार इनमें से कौन सा शीर्षक उपरोक्त गदयांश के लिए सबसे उपयुक्त है ?
    क. महिला सशक्तिकरण
    ख. महिला मार्केट
    ग. मणिपुर की संस्कृति
    घ. आत्मनिर्भर समाज

4. हरियाणा की किन्हीं दो महिलाओं का नाम बताएं जिन्होने जीवन में सभी संघर्षों का सामना करते हुए राज्य और देश का नाम रोशन किया हो ?
5. यदि महिला संगठन से किसी महिला ने 100000 रुपये का लोन दो वर्षों के लिए 5% ब्याज दर पर लिया हो तो महिला संगठन को ब्याज के रूप में कितना धन प्राप्त होगा ?

- चेतना जाठोल , बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक मातनहेल झज्जर।

प्रतिमान 15 - (अकबरी लोटा आधारित)

उत्तराखंड यानी रीति - रिवाजों और परंपराओं से भरपूर एक ऐसा पहाड़ी राज्य, जहां कदम कदम पर आपको गांव और कस्बे में इतिहास से जुड़ी तमाम दिलचस्प कहानियां सुनने को मिलेंगी। आज आपको कलयुग के महा मिलावटी दौर में भी सतयुग की रघुकुल रीति से जुड़ी एक परंपरा से रूबरू कराते हैं| आज के इस दौर में लोग बात - बात में झूठ फ़रेब और दो मुंही बातें करते हैं| वहां इस दौर में रघुकुल रीत आज भी निभाई जा रही है। उत्तराखंड में एक ऐसा जनजातीय इलाका है जहां वादा खिलाफी को सबसे बड़ा जुर्म माना जाता है। "लोटा नमक" प्रथा में बड़े से बड़ा संकल्प भी सिर्फ जुबानी लिया जाता है, जिसकी अहमियत सरकारी दस्तावेज और पंचों की गवाही से ज्यादा अहमियत रखती है। दून के जौन सारबाबर इलाके के "जुबानी संकल्प" की अहमियत का आलम यह है कि संकल्प लेने में स्थानीय ग्रामीण किसी लिखा - पढ़ी की बजाय "लोटा नमक" का उपयोग करते हैं। परंपरा के मुताबिक संकल्प लेने वाला व्यक्ति वचन देता है कि आज वह जो भी संकल्प लेगा या वचन देगा, उस पर हमेशा अटल रहेगा और अगर ऐसा न हुआ तो उसका और उसके परिवार का वजूद ठीक उसी तरह खत्म हो जाएगा,जैसे पानी से भरे लोटे में नमक का वजूद खत्म हो जाता है। उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

प्रश्न1. आजकल का युग महा मिलावटी क्यों कहा जाता है?

प्रश्न2. रघुकुल रीति से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न3. सरकारी दस्तावेज क्या होते हैं?

प्रश्न4. एक बेईमान डीलर अपने सामान को लागत मूल्य पर बेचने का दावा करता है, लेकिन 1 किलो की बजाय 850 ग्राम वजन तोलता है| उसका लाभ प्रतिशत कितना है?

- सोमप्रकाश, **प्रवक्ता,** जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सिरसा।

प्रतिमान 16 - (अकबरी लोटा आधारित)

कल्लू ने इंटर पास किया; आगे पढ़ने की हालत नहीं थी। गुरुजी की सिफारिश पर उसे नहर विभाग में क्लर्की मिल गई थी। वह बड़ा मन लगाकर ईमानदारी से काम करता था। कल्लू के बड़े इंजीनियर साहब उसके काम से बहुत खुश थे और उसे बेहद चाहते थे। एक दिन करोड़ीमल अपने पैसे वसूल ने कल्लू के दफ्तर आ गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। बड़े साहब के पूछने पर कल्लू ने उन्हें पूरा वृतांत सुना दिया। अब तो बड़े साहब कुछ चिंतित हुए, क्योंकि उन्हें मालूम था कि क्लर्की में कोई भी आदमी आजकल की मँहगाई में कुछ बचा नहीं सकता। वे घर पर भी बेचैन रहे। दूसरे दिन उन्होंने कल्लू से उसके छोटे भाई लल्लू को बुलवा लिया। दोनों भाइयों में बड़ी एकता थी। लोटई के मरने के बाद लल्लू, कल्लू का पिता के समान आदर करता था। लल्लू ने इंजिनीयर साहब को सादर प्रणाम किया। इंजीनियर साहब बोले, "क्या नाम है तुम्हारा ?" लल्लू ने उत्तर दिया , " जी, लालचंद।" देखो लालचंद तुम्हारा भाई बहुत ईमानदार और मेहनती है। दिनभर काम में लगा रहता है। तुम लोगों पर तुम्हारे पिता जी का कर्जा भी है। " लल्लू ने कहा," जी साहब।" वह बोले "तो तुम ऐसा करो , एक अर्जी लिख लाओ। हमारे यहां एक छोटा - सा कार्य है। इस नहर से किसानों को निश्चित पानी ही मिलना चाहिए। न कम न ज्यादा। इसका हिसाब - किताब रखना है। कुछ किसान लोग हमारे कर्मचारी को कुछ ले-देकर ज्यादा पानी ले लेते हैं। तुम यहां पर ईमानदारी से काम करो। लल्लू ने इंजीनियर साहब के पैर छुए और खुशी - खुशी अपने घर गया। धीरे-धीरे दोनों भाइयों ने मिलकर सेठ करोड़ी मल का पूरा कर्जा चुका दिया। एक ट्यूबेल ऑपरेटर से अपनी बहन की शादी भी कर दी ।शादी में इंजीनियर साहब आए और दोनों भाइयों की बड़ी सराहना की। इंजीनियर साहब को कल्लू पर बड़ा गर्व था कि उसने अपनी ईमानदारी, कड़े परिश्रम, लगन और निष्ठा से अपने परिवार को घोर गरीबी से उबारा ।

1. इंजीनियर साहब कल्लू को बेहद चाहते थे क्योंकि ---
    a) कल्लू उनकी बहुत चापलूसी करता था
    b) कल्लू रिश्वत के आधे रूपये उन्हें भी देता था
    c) a और b दोनों
    d) कल्लू ईमानदारी, लगन और निष्ठा से काम करता था

    (क) a (ख़) b (ग) c (घ)d

2. इंजीनियर साहब ने कल्लू के भाई लल्लू को नौकरी क्यों दी होगी ? कोई तीन कारण लिखें ।

प्रश्न 3 कल्लू के घर के बारे में जानकर इंजीनियर साहब चिंतित क्यों हुए और उन्होंने कल्लू की कैसे सहायता की ? केवल 50 शब्दों में लिखें ।

4. कल्लू और लल्लू दोनों भाई क्रमश: 12000 रूपये और 8000 रूपये मासिक वेतन लेते हैं और पिता जी के नाम 180000 रूपये कर्जा है तो बताओ वो दोनों मिलकर कितने दिनों में कर्ज चुका पाएँगे?

(क) 6 महीने (ख़) एक साल (ग) 9 महीने (घ)7 महीने 15 दिन

5. कल्लू के पिता जी ने करोड़ीमल से 100000 रूपये 2 साल के लिए लिये थे और अब वो रूपये साधारण ब्याज समेत180000 हो गए हैं तो बताओ कि ब्याज की दर क्या लगाई होगी ?

(क) 40% वार्षिक (ख़) 90% वार्षिक (ग) 80% वार्षिक (घ) 50% वार्षिक

- सुशील कौशिक, बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक उचाना , जींद

प्रतिमान 17 - (अकबरी लोटा आधारित)

हमारे समाज में मक्खन खाने और मक्खन लगाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। पुराने जमाने में दही को मथ कर घरों में बनाया जाता था, जिसे सभी बड़े चाव से खाते थे।धीरे धीरे घरो के साथ-साथ मक्खन बनाने का कार्य कुछ कंपनियों ने भी आरंभ कर दिया।आज से लगभग 60 वर्ष पहले जब किसी की चापलूसी करने की बात आती थी तो कहा जाता था , थोड़ा पोलशनलगाओ क्योंकि देश में मक्खन का व्यापार सबसे पहले पोलशन कंपनी ने ही किया था। कंपनी का नाम इतना मशहूर हो गया था कि पोलशन मक्खन का पर्यायवाची शब्द बन गया था। वैसे ही जैसे एक जमाने में वनस्पति घी डालडा के नाम से जाना जाता था। इसी प्रकार 40 - 50 वर्षों से अमूल नाम हर एक जुबान पर चढ़ा हुआ है।अमूल मक्खन के बहुत पहले मुंबई और पश्चिमी भारत में मक्खन का मतलब पोलशन मक्खन ही होता था। पोलशन मक्खन पोलशन डेयरी बनाया करती थी जिसकी शुरुआत पेस्तोंजी एडुलजी दलाल ने की थी। जिन्हें उनके दोस्त पाली नाम से बुलाया करते थे। पोलशन डेयरी कंपनी काफी पैकेजिंग और वितरण के व्यवसाय से जुड़ी हुई थी। अमूल के इतिहासकार रुथ हेरेडिया के अनुसार पेस्तोंजी1910 से मक्खन बनाने के व्यवसाय में आए। उन्होंने गुजरात में केडा गांव में मक्खन बनाने का अपना पहला कारखाना खोला। यह भारत में डेयरी उत्पादन बनाने वाली पहली कंपनी थी।

प्रश्न 1:-हमारे घरों में मक्खन बनाने का कौन सा तरीका अपनाया जाता है , वर्णन करें?

प्रश्न 2:-मक्खन लगाने की परंपरा से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 3:-भारत में डेरी उत्पादन बनाने वाली पहली भारतीय कंपनी कौन सी थी ?

प्रश्न 4:-पोलशन डेयरी कंपनी प्रारंभ में किस व्यवसाय से जुड़ी हुई थी?

प्रश्न 5:-यदि अमूल कंपनी एक शहर में 1 दिन में 775 किलो ग्राम मक्खन सप्लाई करती है तो उस शहर में वह 15 दिनों में कुल कितना मक्खन सप्लाई करेगी?

- डॉ. दलबीर सिंह **प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय** बारोदा, उचाना , जींद

प्रतिमान 18 - (अकबरी लोटा आधारित)

एक सज्जन बनारस पहुँचे। स्टेशन पर उतरे ही थे कि एक लड़का दौड़ता आया।
'मामा जी! मामा जी!' - लड़के ने लपककर चरण छूए।
वे पहचाने नहीं। बोले - 'तुम कौन?'
'मैं मुन्ना। आप पहचाने नहीं मुझे?'
'मुन्ना?' वे सोचने लगे।
'हाँ, मुन्ना। भूल गए आप मामा जी! खैर, कोई बात नहीं, इतने साल भी तो हो गए।'
'तुम यहाँ कैसे?'
'मैं आजकल यहीं हूँ।'
'अच्छा।'
'हाँ।'
मामा जी अपने भानजे के साथ बनारस घूमने लगे।चलो, कोई साथ तो मिला। कभी इस मंदिर, कभी उस मंदिर।
फिर पहुँचे गंगा घाट।सोचा, नहा लें।
'मुन्ना, नहा लें?'
'जरूर नहाइए मामा जी! बनारस आए हैं और नहाएँगे नहीं, यह कैसे हो सकता है?'
मामाजी ने गंगा में डुबकी लगाई। हर - हर गंगे।
बाहर निकले तो सामान गायब, कपड़े गायब! लड़का... मुन्ना भी गायब!
'मुन्ना... ए मुन्ना!'
मगर मुन्ना वहाँ हो तो मिले। वे तौलिया लपेट कर खड़े हैं।
'क्यों भाई साहब, आपने मुन्ना को देखा है?'
'कौन मुन्ना?'
'वही जिसके हम मामा हैं।'
'मैं समझा नहीं।'
'अरे, हम जिसके मामा हैं वो मुन्ना।'
वे तौलिया लपेटे यहाँ से वहाँ दौड़ते रहे । मुन्ना नहीं मिला।
भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी यही स्थिति है मित्रो! चुनाव के मौसम में कोई आता है और हमारे चरणों में गिर जाता है ।मुझे नहीं पहचाना , मैं चुनाव का उम्मीदवार। होने वाला एम.पी.। मुझे नहीं पहचाना? आप प्रजातंत्र की गंगा में

डुबकी लगाते हैं। बाहर निकलने पर आप देखते हैं कि वह शख्स जो कल आपके चरण छूता था, आपका वोट लेकर गायब हो गया। वोटों की पूरी पेटी लेकर भाग गया। समस्याओं के घाट पर हम तौलिया लपेटे खड़े हैं। सबसे पूछ रहे हैं - क्यों साहब, वह कहीं आपको नजर आया? अरे वही, जिसके हम वोटर हैं। वही, जिसके हम मामा हैं। पाँच साल इसी तरह तौलिया लपेटे, घाट पर खड़े बीत जाते हैं।

प्रश्न 1 - लोकतंत्र को सुचारू रूप से चलाने में आप क्या भूमिका निभा सकते हैं ?

प्रश्न 2 - प्रजातंत्र व लोकतंत्र एक हैं या अलग - अलग हैं, कैसे ?

प्रश्न 3 - आप अपने मत का सही प्रयोग कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 4 - एक चुनाव में कुल 28,000 मत डले। प्रत्याशी ए को प्रत्याशी बी से 20 प्रतिशत मत अधिक प्राप्त हुए, तो बताओ प्रत्याशी ए और प्रत्याशी बी को कितने - कितने मत प्राप्त हुए ?

प्रश्न 5 - एक चुनाव पेटी की लम्बाई 70 से0 मी0 है तथा चैड़ाई 50 से0 मी0 है, तो चुनाव पेटी का क्षेत्रफल ज्ञात कीजिए ?

- **नीतू,प्रवक्ता,** रा.उ.वि. गोला **,साहा, अम्बाला**

प्रतिमान 19 - (सूर के पद आधारित)

सूरदास यद्यपि जन्मांघ थे, लेकिन श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का चित्रण उनके जैसा अन्य कवि नहीं कर सका है। उनके वर्णन से ऐसा लगता है मानो सूरदास ने श्री**कृष्ण** के साथ लीलाएँ की हों। नंदबाबा के यहाँ दूध, दही और मक्खन की कमी नहीं है, लेकिन श्री**कृष्ण** को चोरी में ही आनंद मिलता है। छींके पर रखे मक्खन को बालक श्री**कृष्ण** ऊखल परतो कभी ग्वालों के कंधों पर चढ़कर चुराते हैं।

श्री**कृष्ण** द्वारा माक्खन चुराने का भारतीय मानस पर इतना असर है कि बच्चों द्वारा खाने–पीने की चीजें चुराने को बुरा नहीं माना जाता है। लेकिन, आज के आर्थिक युग में समस्त धारणाएँ बदल रही है। कहने को तो हरियाणा में दूध की उपलब्धता एक किलोग्राम प्रतिव्यक्ति है, पर वास्तविकता यह है कि बच्चों का हक मारा जा रहा है। बच्चों की सेहत की अपेक्षा धनको खुशहाली का प्रतीक माना जा रहा है।हालांकि दूध विक्रय से महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता मिली है, लेकिन दूसरी ओर बच्चे दूध–दही की अपेक्षा फास्टफूड की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

क. श्री**कृष्ण** को किस में आनंद मिलता है?

ख. सूरदास द्वारा किया गया श्री**कृष्ण** का वर्णन कैसा है?

ग. दूध का मूल्य 48 रुपए प्रति किलोग्राम है। यदि इसके मूल्य में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी होजाए तो दूध का मूल्य कितने रुपए प्रति किलोग्राम हो जाएगा?

अ) 52 ब) 52.2 स) 55.2 द) 56.2

घ. एक परिवार की आय 8000 रुपए मासिक है। इस आय का 75 प्रतिषत घरेलू खर्च तथा 8 प्रतिशत बच्चों की शिक्षा पर खर्च होता है तो बताओ परिवार के पास शेष रुपए कितने बचेंगे?

अ) 1360 ब) 1740 स) 2000 द) कोईनहीं

ड. दूध विक्रय से क्या लाभ और हानि हैं?

- **अनिल कुमार, प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कामानिया, नंगल चौधरी**

प्रतिमान 20 - (सूर के पद आधारित)

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायौ ।
मोसौ कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ ?
कहा करौं इहि रिस के मारैं खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता को है तेरौ तात ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात ।
चुटुकी दै-दै ग्वाल नवावत, हँसत, सबै मुसुकात ॥
तू मोही कौं मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै ।
मोहन-मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै ॥

जो तुम सुनहु जसोदा गोरी।
नंदनंदन मेरे मंदिर में आजु करन गए चोरी॥
हौं भइ जाइ अचानक ठाढ़ी कह्यो भवन में कोरी।
रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहज मति भोरी॥
मोहि भयो माखन पछितावो रीती देखि कमोरी।
जब गहि बांह कुलाहल कीनी तब गहि चरन निहोरी॥
लागे लेन नैन जल भरि भरि तब मैं कानि न तोरी।
सूरदास प्रभु देत दिनहिं दिन ऐसियै लरिक सलोरी॥

प्रश्न 1 काले गोरे रंग भेद के प्रति आप क्या विचार रखते हैं ।संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 2 भाई बहनों के बीच लड़ाई झगड़े होते रहते हैं और इनमें किसी एक को हर बार डांट पड़ती है और हम अपने माता-पिता पर दोष लगाते हैं कि वह हमेशा मुझे ही डांटते हैं जबकि माता-पिता गलती होने पर ही हमें डांटते हैं । उनके मन में कोई भेदभाव नहीं होता । क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है ? कोई एक घटना संक्षिप्त में लिखिए।

प्रश्न 3 आपके घर में मक्खन/घी का प्रयोग किस किस रूप में होता है?

प्रश्न 4 जन्म देने वाले से पालन पोषण करने वाला कहीं बड़ा होता है । किसी एक उदाहरण के साथ इस बात की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 5 गिरिधर लाल के परिवार में उसकी पत्नी राधा 3 पुत्र और दो पुत्रियां हैं । एक पुत्री अभी अविवाहित है और दूसरी पुत्री का एक पुत्र है , साथ ही दो पुत्रों में से प्रत्येक के दो बच्चे हैं और तीसरे के 3 बच्चे हैं। एक वृद्ध चाची तथा दामाद भी उनके साथ रहते हैं। गिरिधर लाल के परिवार में कुल कितने सदस्य हैं?

- हेमलता , बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक बहल

प्रतिमान 21 - (सूर के पद आधारित)

मैया मैं तो चन्द खिलौना लेहों ।
जेहौं लोटि धरनी पर अबहीं तेरी गौद न ऐहों ॥
सुरभि कौ पय पान न करिहौं बेनी सिर न गुहैहौं ।
हवे हौं पूत नन्द बाबा को तेरो सुत न कहैहौं ॥
आगे आउ बात सुनि मेरी बलदेवहिं न जनैहौं ।
हंसी समुझावतिकहती जसोमति नई दुलहिया दैहौं ॥

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मो सों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो॥
कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात॥
गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हंसत सबै मुसुकात॥
तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै॥
सुनहु कान बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

1. दाऊ शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है ?

(i) कृष्ण (ii) नन्द (iii) बलराम (iv) यशोदा

2. कृष्ण खेलने के लिए नहीं जाने का क्या कारण बता रहे हैं ?

3. आपके द्वारा अपने माता पिता से किसी खिलौने को प्राप्त करने के लिए की गई जिद्द का वर्णन कीजिये | बताइए कि क्या आपकी जिद्द पूरी हुई थी ?

4. आप एक मेले में 100 रूपए लेकर जाते हैं | मेले में 25 रूपए में कार, 12 रूपए में डमरू, 40 रूपए में रेल, 35 रूपए में हवाई जहाज, 10 रूपए में तोता, 18 रूपए में कैमरा तथा 26 रूपए में बस खिलौने मिल रहे हैं | बताइये-

(i) 100 रूपए में आप ज्यादा से ज्यादा कितने खिलौने खरीद सकते हैं तथा कौन कौन से ? नाम भी लिखिए |

5 पदों में जिस प्रकार की स्थिति का वर्णन किया गया है क्या वह वास्तविकता में संभव है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये |

- जोगिन्दर सिंह , प्रवक्ता, रा. उ. वि. सिधनवा, बहल

प्रतिमान 22 - (सूर के पद आधारित)

कलाई कोमल - कोमल, श्यामल - श्यामल सौम्य - स्वरूप।
कान्हा करत किलोल, राधिका रास रचावे अनूप।
माखन - मंथन मात यशोदा करत रहत भरपूर।
झांकत रहत कन्हैया जब तक मात होत नहीं दूर।
मैया जब हो गई दूर कर मंथन का पूरा काम।
लपक पड़े माखन खाने को लालायित घनश्याम।
पूर्ण तुष्ट होकर भागे लल्ला जो देवकीनंदन।
मुख माखन मंडित था उनका अनूठा महिमा मंडन।
ऐसी बाल - लीला का नभचर देवों ने पाया दर्शन।

प्रश्न -1. श्री कृष्ण के बाल रूप का वर्णन अपने शब्दों में करो?
प्रश्न -2. आपको बचपन में कौन - कौन सी खाने की चीजें पसंद थीं?
प्रश्न -3. हरियाणा को दूध - दही का घर कहते हैं। आज के समय में यहां दूध की क्या स्थिति है?
प्रश्न -4. चोटी को नागिन की तरह लंबी और मोटी क्यों कहते हैं?
प्रश्न -5. गाय का घी 900 रुपए प्रति लीटर और भैंस का घी 700 रुपए प्रति लीटर बिकता है। राम को 3 लीटर गाय का घी और 4 लीटर भैंस के घी के लिए कितने पैसे देने पड़ेंगे?

- मंजू, प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शामलहेरी, साहा, अम्बाला

प्रतिमान - 23

प्रश्न 1. 'मर्दानी' शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया गया है?

प्रश्न2. भ्रूण-हत्या को नादानी क्यों कहा गया है?

प्रश्न3. मीरा किस कारण से प्रसिद्ध है?

(क) समाज सेवा

(ख) कृष्ण- भक्तिन कवयित्री

(ग) राजनेता

(घ) कुशल गृहिणी

प्रश्न4. आपके विचारानुसार स्त्री समस्याओं का क्या समाधान हो सकता है?

प्रश्न5. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के कारण पिछले पाँच वर्षों में लिंगानुपात871 से 923 हो गया। बताइए इसमें कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई?

- डॉ. महेन्द्रसिंह, बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक बौन्दकलां।

प्रतिमान - 24 (सरकारी स्कूलों की ओर बढ़ता रुझान)

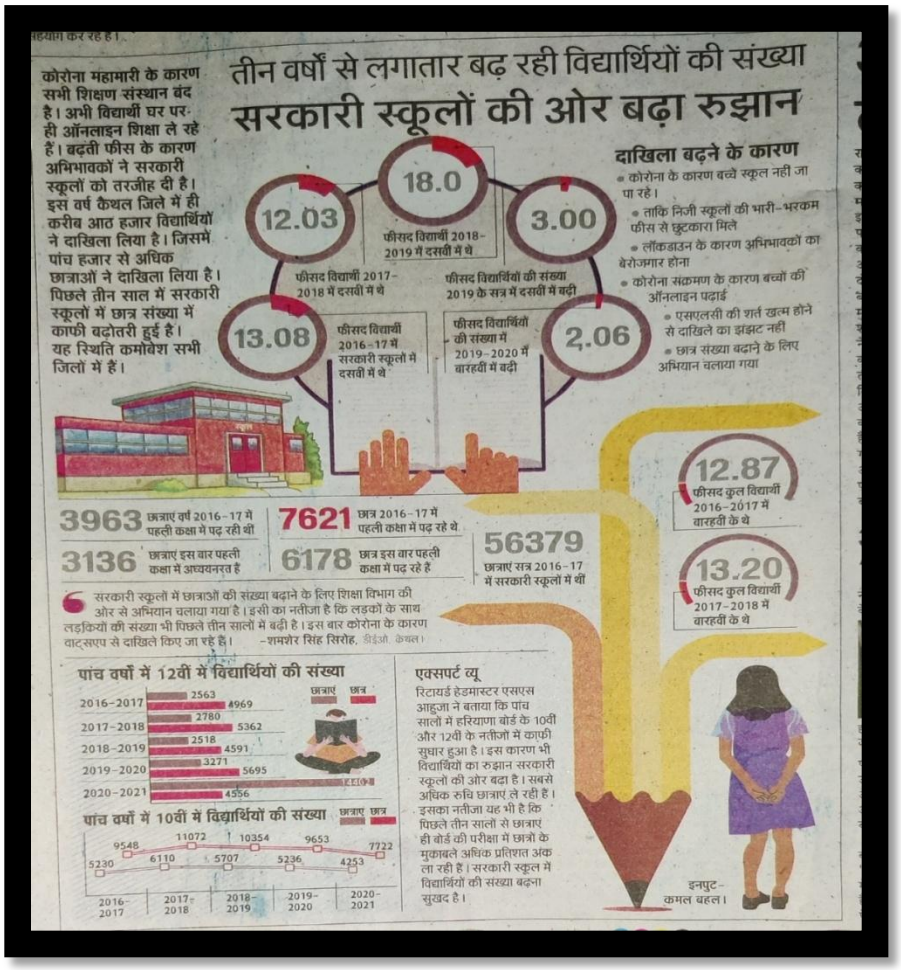

प्रश्न:1.सरकारी स्कूलों में दाखिले बढ़ने के तीन कारण लिखें?

प्रश्न :2. सरकारी स्कूलों की कक्षा दसवीं में वर्ष 2016- 17 से वर्ष 2020 - 21 तक, किस सत्र में छात्रों की संख्या सबसे ज्यादा रही?

प्रश्न: 3. वर्ष 2016 - 2017 में सरकारी स्कूलों की कक्षा 12 वीं में छात्राओं की संख्या बताइए?

प्रश्न:4. वर्ष 2016-17 में दसवीं कक्षा में 9548 छात्र थे जो 2017-18 में बढ़कर 11072 होगए। बताइए इस सत्र में कुल कितने प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई?

प्रश्न: 5.सरकारी स्कूलों की पहली कक्षाओं में सत्र 2020 - 2021 में पढ़ रहे कुल छात्र -छात्राओं की संख्या बताइए?

-नवरत्न, प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भिवानी।

प्रतिमान - 25

नासा की चेतावनी, खतरे में धरती का सुरक्षा घेरा

■वॉशिंगटन

हमारी धरती का सुरक्षा कवच खतरे में है। यह वही सुरक्षा कवच है, जो सूर्य के खतरनाक विकिरण से हमें बचाता है। दरअसल, मैग्नेटिक फील्ड से बना पृथ्वी का सुरक्षा कवच लगातार कमजोर हो रहा है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के ताजा अध्ययन में यह खुलासा किया गया है। पृथ्वी का यह सुरक्षा कवच दक्षिणी अमेरिका और अटलांटिक महासागर के ऊपर दशकों से मौजूद है। इसी वजह से पृथ्वी के इस हिस्से को वैज्ञानिकों ने साउथ अटलांटिक एनामोली का नाम दिया है। नासा के वैज्ञानिकों का कहना है कि यह साउथ अटलांटिक एनामोली हर सेकेंड बड़ा होता जा रहा है। यह दो भागों में भी बंटता जा रहा है। यूरोपियन स्पेस एजेंसी (ईएसए) का कहना है कि मई के महीने में इसने पिछले 200 साल में 9 फीसदी तक अपनी क्षमता गंवाई है। वहीं, पृथ्वी का सुरक्षा कवच यानी साउथ अटलांटिक एनामोली 1970 से अभी तक 8 फीसदी और कमजोर हो गया है।

अंतरिक्ष अभियानों को होगा नुकसान

रिपोर्ट में बताया गया है कि यह अंतरिक्ष अभियानों के डेटा इकट्ठा करने वाले सिस्टम और नेविगेशन सिस्टम में गड़बड़ी कर सकता है। इसके अलावा कमजोर मैग्नेटिक फील्ड से सैटेलाइट्स पर भी कणों के विकरणों का असर होगा। साउथ अटलांटिक एनामोली के ऊपर से जाने वाले सभी सैटेलाइट्स पर भी असर होगा, जिससे नेविगेशन सिस्टम में खराबी आ जाएगी।

प्र1 सूर्य के खतरनाक विकिरण से हमें बचाने वाला सुरक्षा कवच किसका बना होता है ?

प्र2 नासा कहाँ की अंतरिक्ष एजेंसी है और इसका पूरा नाम क्या है?

प्र3 पृथ्वी को बचाने वाला सुरक्षा कवच पृथ्वी पर कहाँ है?

प्र4 सुरक्षा कवच पिछले 200 साल मे कितने फ़ीसदी कम हुआ है?

प्र5 120 मीटर लंबी एक रेलगाड़ी 90 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से चल रही है। तब 230 मीटर लंबे प्लेटफार्म को पार करने में कितना समय लेगी?

क- 4⅘सेकंड ख- 9 सेकंड ग- 7 सेकंड घ- 14सेकंड

- सत्यबीर सिंह, प्रवक्ता, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जाखोली, राई,

प्रतिमान - 26

'रूपये का इतिहास'

प्राचीन भारतीय मुद्रा

फूटी कौड़ी	से	कौड़ी
कौड़ी	से	दमड़ी
दमड़ी	से	धेला
धेला	से	पाई
पाई	से	पैसा
पैसा	से	आना
आना	से	रुपया बना

256 दमड़ी = 192 पाई =128 धेला

64 पैसा (old) = 16 आना = 1 रुपया

1.	3 फूटी कौड़ी	=	1 कौड़ी
2.	10 कौड़ी	=	1 दमड़ी
3.	2 दमड़ी	=	1 धेला
4.	1.5 पाई	=	1 धेला
5.	3 पाई	=	1 पैसा (पुराना)
6.	4 पैसा	=	1 आना
7.	16 आना	=	1 रुपया

प्राचीन मुद्रा की इन्ही ईकाइयों ने हमारी बोल-चाल की भाषा को कई कहावतें दी हैं, जो पहले की तरह अब भी प्रचलित हैं-

- एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा
- धमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए
- सोलह आने सच इत्यादि
- धेले का काम नही करती हमारी बहू
- पाई-पाई का हिसाब रखना

प्रश्न 1. भारत की सबसे कम कीमत वाली मुद्रा की इकाई कौन सी है?

प्रश्न 2. विद्यार्थी जीवन में पैसे की ज्यादा कीमत है या विद्या की, अपने विचारो को 10 पंक्तियों में लिखिए।

प्रश्न 3. ऐसे कौन -कौन से कार्य हैं जो हम पैसे के बल पर नहीं कर सकते?

प्रश्न 4. हमें सोलह आने प्राप्त करने के लिए कितनी दमड़ी चाहिए?

प्रश्न 5. प्रस्तुत तालिका के आधार पर 5 रूपए में आनो की संख्या क्या होगी?

-प्रवीन कुमार, प्रवक्ता, रा. क. उ. वि. बड़ाला, बॉस, हिसार

प्रतिमान - 27

उपरोक्त विज्ञापन से संबंधित प्रश्न उत्तर-

प्रश्न-1 आकार के आधार पर दांतो को चार भागों में बांटा गया है ।इनके कार्य बताइए।

प्रश्न -2 एक दुकानदार मुक्ता दंत मंजन की कीमत में कमी ना करके उसके साथ मुक्ता चूर्ण का पैकेट नि: शुल्क देता है ।इसका क्या कारण हो सकता है।

प्रश्न-3 यदि मुक्ता दंत मंजन का मूल्य ₹60 है और दुकानदार इसे 10% की छूट पर बेचता है तो वह इसे कितने रुपए में बेचता है।

प्रश्न-4 मुक्ता दंत मंजन का एक पैकेट ₹88 में बेचने पर दुकानदार को 10% का लाभ होता है ।पैकेट का क्रय मूल्य क्या है।

प्रश्न -5 दांतों की देखभाल के लिए कोई दो घरेलू नुस्खे लिखिए।

संतोष कुमारी, बी. आर. पी. हिन्दी, ब्लाक बॉस, हिसार

<u>उत्तरमाला :</u>

प्रतिमान -1

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 टायर बनाने की प्रक्रिया

उत्तर-3 स्लेटी

उत्तर-4 5 KG

उत्तर-5 36

प्रतिमान -2

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 2 घंटे 40 मिनट

उत्तर-5 33%

प्रतिमान -3

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 10 वर्ग से.मी.

उत्तर-4 220 रु

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -4

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 25%

उत्तर-5 6 रू

प्रतिमान -5

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 10 सेंटीमीटर

उत्तर-5 6 किलोमीटर

प्रतिमान -6

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 73.3% कमी

प्रतिमान -7

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 खाना ठंडा हो जाता था

उत्तर-3 2 अरब

उत्तर-4 2 करोड़

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -8

उत्तर-1 छोटी बचत करना

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 गरीबी उन्मूलन हेतु

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 1 लाख 5 हजार

प्रतिमान -9

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 सोनीपत

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 1 :1.5

प्रतिमान -10

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 120

उत्तर-5 276000 रू0

प्रतिमान -11

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 4480

उत्तर-5 120 घंटे

प्रतिमान -12

उत्तर-1 मोबाइल फोन

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 1 रु

उत्तर-4 20%

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -13

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 3:2

उत्तर-5 21000

प्रतिमान -14

उत्तर-1 16 वीं शताब्दी

उत्तर-2 म्यांमार

उत्तर-3 महिला सशक्तिकरण

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 10000 रु

प्रतिमान -15

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 15%

प्रतिमान -16

उत्तर-1 -D

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 9 महीने

उत्तर-5 4%

प्रतिमान -17

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 चापलूसी करना

उत्तर-3 पोलाशन डेयरी

उत्तर-4 पैकेजिंग और वितरण

उत्तर-5 11625 kg

प्रतिमान -18

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 16800 और 11200

उत्तर-5 3500वर्ग सेमी.

प्रतिमान -19

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 55.2

उत्तर-4 कोई नहीं

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -20

उत्तर-1 छात्र स्व.2यं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 17 सदस्य

प्रतिमान -21

उत्तर-1 बलराम

उत्तर-2 ग्वाल चिढाते हैं

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 न्यूनतम मूल्य वाले 5

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

प्रतिमान -22

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 5500रूपए

प्रतिमान -23

उत्तर-1 रानी लक्ष्मी बाई

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 कृष्ण भक्तिन कवयित्री

उत्तर-4 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-5 5.97%

प्रतिमान -24

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 2019-20

उत्तर-3 56379

उत्तर-4 15.96%

उत्तर-5 9314

प्रतिमान -25

उत्तर-1 मैग्नेटिक फील्ड

उत्तर-2 अमेरिका

उत्तर-3 दक्षिणी अमेरिका और अतलांतिक महासागर

उत्तर-4 9 %

उत्तर-5 14 सैकेंड

प्रतिमान -26

उत्तर-1 फूटी कौड़ी

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-4 256 दमड़ी

उत्तर-5 80 आने

प्रतिमान -27

उत्तर-1 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-2 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे

उत्तर-3 54

उत्तर-4 80

उत्तर-5 छात्र स्वयं विवेक से उत्तर देंगे